मासूक की नजर तले, आठों जाम आसिक।
पिए अमीरस सनकूल, हुकम तले बेसक।। १५ ।।

आशिक आठों पहर (रात-दिन) माशूक की नजर में बसा रहता है और निडर होकर माशूक की नजरे करम का रसपान करता है।

न्यारा निमख न होवहीं, करने पड़े न याद।
आसिक को मासूक का, कोई इन बिध लाग्या स्वाद।। १६ ।।

आशिक को कभी भी अपने माशूक को याद नहीं करना पड़ता क्योंकि वह एक क्षण भी जुदा नहीं होता है। आशिक को माशूक की मस्ती का ऐसा नशा चढ़ा रहता है जो कभी नहीं उतरता है।

रोम रोम बीच रमि रह्या, पिउ आसिक के अंग।
इस्कें ले ऐसा किया, कोई हो गया एकै रंग।। १७ ।।

आशिक के अंग के रोम-रोम में उसका माशूक समाया रहता है और इश्क में दोनों एक ही मस्ती में होते हैं।

इन जुबां इन आसिक का, क्यों कर कहूं सो बल।
धाम धनी आसिक सों, जुदा होए न सकें एक पल।। १८ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि इस जबान से आशिक की शक्ति का वर्णन कैसे करूं? धाम-धनी अपने आशिक (ब्रह्मसृष्टि) से एक क्षण के लिए भी जुदा नहीं होते।

महामत कहें मेहेबूब के, रोम रोम लगे घाए।
इन अंग को अचरज होत है, अजूं ले खड़ा अरवाए।। १९ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि मेरे लाडले श्री राजजी महाराज के इश्क के घाव मेरे रोम-रोम में लगे हैं। फिर भी हैरानी की बात है कि यह तन खड़ा कैसे है?

॥ प्रकरण ॥ ९१ ॥ चौपाई ॥ १३०४ ॥

राग श्री

अब हम धाम चलत हैं, तुम हूजो सबे हुसियार।
एक खिन की बिलम न कीजिए, जाए घरों करें करार।। १ ।।

श्री महामतिजी सुन्दरसाथजी को कहते हैं कि अब हम सब तरफ से चित्त हटाकर परमधाम में चित्त लगाते हैं और तुम सभी सावचेत हो जाना। यदि तुम भी वह सुख चाहते हो तो तुम एक पल की देरी न करो और अपने अखण्ड घर परमधाम में सुरता लगाकर मगन हो जाओ।

साथ देखो ए अवसर, वासना करो पेहेचान।
आए पोहोंचे बृज में, याद करो निसान।। २ ।।

हे सुन्दरसाथजी! यह सुन्दर मौका हाथ आया है। अपनी आत्मा की पहचान कर लो। पहले धाम से बृज में आए थे। उसी लीला को याद करो।

धनिएं देखाया नजरों, सुरतां दैयां फिराए।
अब पैठे हम रास में, उछरंग हिरदे चढ़ आए।। ३ ।।

धनी ने सुरता घुमाकर बृज का खेल दिखाया। उसके बाद हम रास में गए और धनी के साथ मस्ती में खेले।

Nijanand App

जाग्रत बुध हिरदे आई, अब रहे ना सकें एक खिन।
सुरत टूटी नासूत से, पोहोंची सुरत वतन।।४।।

अब जागनी के ब्रह्माण्ड में जागृत बुद्धि के हृदय में आने से पहचान हो जाने पर एक क्षण भी यहां नहीं रहा जाता। अब इस माया के ब्रह्माण्ड से सुरता हटकर परमधाम के चितवन में लग गई है।

चिन्हार भई सब साथ में, आई धाम की खुसबोए।
प्रेम उपज्या मूल का, सुपन रेहेना क्यों होए।।५।।

जागृत बुद्धि की तारतम वाणी से सुन्दरसाथ को परमधाम की पहचान हुई और अब मूल परमधाम का प्रेम आ गया है, इसलिए अब सपने के ब्रह्माण्ड में नहीं रहा जाता।

अब नींद हमारी क्यों रहे, इन बखत दिए जगाए।
जागे पीछे झूठी भोम में, क्यों कर रह्यो जाए।।६।।

जागृत बुद्धि के आने से नींद कैसे रह सकती है? इस समय जागनी के ब्रह्माण्ड में जागृत बुद्धि ने जगा दिया है। अब जागने के बाद झूठे ब्रह्माण्ड में कैसे रहा जाए?

देख तैयारी साथ की, ओ समया रह्या न हाथ।
अवसर नया उदे हुआ, उमंगियो सब साथ।।७।।

लालदास और गोवर्धनदास के झगड़े से सुन्दरसाथ में आई कायरता से जागनी का कार्य रुक गया। अब सब सुन्दरसाथ जागृत बुद्धि से जागकर उमंग के साथ कुर्बान होने की तैयारी में हैं। ऐसी नई भावना सभी में आ गई है।

क्यों रहे सुरतें पकड़ी, एक दूजे के आगे होए।
दौड़ा दौड़ ऐसी हुई, पीछे रहे न कोए।।८।।

मोमिन कुर्बानी के जोश में एक-दूसरे के आगे आ रहे हैं और ऐसी होड़ लगी है कि कोई कुर्बानी करने में पीछे नहीं रहेगा।

कई हुती देस परदेस में, ए बातें सुनियां तिन।
तिनकी सुरतें इत बांधियां, तित रहे न सकें एक खिन।।९।।

सुन्दरसाथ की कुर्बानी की हकीकत सुनकर जो सुन्दरसाथ देश और परदेश में घरों में रह गए थे। उनका ध्यान भी यहीं श्री पन्नाजी में लगा था। वह अपने घरों में एक क्षण के लिए भी चैन नहीं ले सके।

परदेसें साथ पसर्‌यो हुतो, तित सबे पड़यो सोर।
यों ठौर ठौर रंग फैलिया, हुआ महंमदी दौर।।१०।।

मोमिनों की कुर्बानी का समाचार जब परदेस (विदेश) के सुन्दरसाथ को मिला तो उनमें भी खलबली मच गई। वह भी कुर्बानी के लिए (वह भी मेरी राह पर चलने को) तैयार हो गए।

पीछला साथ आए मिलसी, पर अगले करें उतावल।
केताक साथ विचार नीका, सो जानें चलें सब मिल।।११।।

पीछे जो सुन्दरसाथ देश-विदेश में माया में रह गए हैं, वह तो बाद में आकर मिलेंगे ही, परन्तु जो साथ में हैं उनको कुर्बानी करने की उतावली लगी है। कुछ सुन्दरसाथ ऐसे विचारों वाले थे जो सोचते थे कि सबको आ जाने दो फिर चलेंगे।

Nijanand App

इन बिध सोर हुआ साथ में, ठौर ठौर पड़ी पुकार।
एक आए एक आवत हैं, एक होत हैं तैयार।। १२ ।।

इस तरह से सुन्दरसाथ में कुर्बानी की लहर दौड़ गई। कोई चरणों में आ गए, कोई आ रहे हैं और कोई आने की तैयारी में हैं।

ऐसा समया इत हुआ, आए पोहोंचे इन मजल।
कोई कोई लाभ जो लेवहीं, जिन जाग देखाया चल।। १३ ।।

उस समय सुन्दरसाथ के अन्दर ऐसा हो गया कि जैसे हम अपनी मंजिल तक पहुंच गए हैं। उनमें से जो जागकर (धनी की पहचान कर) चले, उन्होंने कुर्बानी का लाभ लिया।

सुध बुध आई साथ में, सुरता फिरी सबन।
कोई आगे पीछे अव्वल, सबे हुए चेतन।। १४ ।।

सब सुन्दरसाथ के बीच में जागृति आई। माया से मन हटाकर कोई आगे, कोई पीछे आए। कोई शुरू में आए। इसी तरह सब सावचेत हो गए।

कोई कोई पीछे रेहे गई, तिनकी सुरत रही हम मांहें।
ढील करी ज्यों स्वांतसियों, आए अंग पोहोंचे नाहें।। १५ ।।

कोई-कोई सुन्दरसाथ माया में रह गया पर उनकी सुरता तो सदा हमारे साथ रही। उनके तन सेवा का लाभ नहीं ले सके और उन्होंने सांसारिक कष्ट उठाए। वैसे ही जैसे स्वांतसी सखियों को देरी करने के कारण माया के कष्ट सहने पड़े।

कहे महामत परीछा तिनकी, जो पेहेलें हुए निरमल।
छूटे विकार सब अंग के, आए पोहोंचे इस्क अव्वल।। १६ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि जिन्होंने जागृत बुद्धि की वाणी से अपने विकार निकालकर अपने को निर्मल कर लिया और सबसे पहले धनी का इश्क लेकर चरणों में आए, यही मोमिनों की परीक्षा है।

॥ प्रकरण ॥ ९२ ॥ चौपाई ॥ १३२० ॥

राग श्री

अब हम चले धाम को, साथ अपना ले।
लिख्या कौल फुरमान में, आए पोहोंच्या ए।। १ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि कुरान में लिखे कौल के अनुसार (बारहवीं सदी में फजर का) समय आ गया है। अब हम सुन्दरसाथ को लेकर धाम के चितवन में मग्न हो रहे हैं।

सखी हम तो हमारे घर चले, तुम हूजो हुसियार।
सुरता आगे चल गई, हम पीठ दई संसार।। २ ।।

हे सखी! हम तो अपने घर परमधाम में मग्न हो रहे हैं। तुम सावचेत हो जाना। हमने संसार को पीठ करके अपनी सुरता को परमधाम में लगा लिया है।

हममें पीछे कोई ना रहे, और रहो सो रहो।
गुन अवगुन सबके माफ किए, जिन जो भावे सो कहो।। ३ ।।

अब हमारे सुन्दरसाथ में कोई पीछे नहीं रहना चाहिए। कोई रहे तो रहे। हमने तो सबके गुण और अवगुण को भुला दिया है। अब जिन्हें जैसा कहना है, कहते रहो।

Nijanand App